REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

शुंगकालीन मृण्मूर्तियाँ : हरियाणा के सन्दर्भ मे एक अध्ययन

Anu Bala[1] and Dr. Rajpal[2]
[2]Associate Professor , Dept. of Ancient Indian History , Culture and Archaeology , Kurukshetra University , Kurukshetra, Haryana (India)

शोध आलेख सार

शुंगकाल मृण्मूर्ति कला के निर्माण में सभी युगों में एक शानदार युग था ।इस काल में निर्माण शैली की दृष्टि से मृण्मूर्ति कला का एक नवीन अध्याय प्रारंभ हुआ । इस काल को भारतीय मृण्मूर्ति कला का उत्कृष्ट काल भी कह सकते हैं । इस काल के कलाकारों ने साँचे का व्यापक रूप से प्रयोग किया तथा मूर्तियों के निर्माण में प्रयुक्त डौलिया शैली को छोड़कर साँचें द्वारा मूर्ति निर्माण शैली को अपनाया । साँचे का प्रयोग कर अब छोटे से फलक में भीदृश्य दिखाना संभव हुआ जोकि मॉडलिंग में संभव नहीं था । इस परिवर्तन द्वारा मृण्मूर्ति कला में एक स्वाभाविक निखार दिखाई देने लगा । शुंग काल में कलाकृतियाँ राजकीय सहयोग की अपेक्षा जनसामान्य के योगदान से बनने लगी । मौर्यकाल में स्वदेशी कला ने साम्राज्य के गौरव को बढ़ाया लेकिन कला में समाज की अपेक्षा धार्मिकता को अधिक महत्त्व दिया गया। इसके विपरीत शुंग काल में धार्मिक पक्ष के साथ-साथ सामाजिक पक्ष का भी चित्रण किया जाने लगा । मौर्य कला राजकीय कला के रूप में तथा शुंगकला लोककला के रूप में विख्यात है। कौशाम्बी, अहिच्छत्र, मथुरा, राजघाट, भीटा, ताम्लुक आदि शुंगकालीन मृण्मूर्ति कला के प्रमुख केन्द्र थे । शुंगकालीन मृण्मूर्तियाँ हरियाणा के सुघ, अग्रोहा, नौरंगाबाद, अमीन आदि पुरास्थलों से भी प्राप्त हुई है । इन पुरास्थलों से मातृदेवी, अर्ध-नारीश्वर,विष्णु, यक्षी, नारी, पुरुष, मिथुनाकृतियाँ,तख्ती लिखता बच्चा की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई है ।

मुख्य-शब्द: शुंग वंश, साँचे, डौलिया, अर्ध-नारीश्वर, यक्षी,कौशाम्बी, अहिच्छत्र, मथुरा, सुघ, अग्रोहा, नौरंगाबाद, अमीन, कलाकृतियाँ ।

मौर्य राजवंश के अस्त होने के साथ ही जिस नवीन राजवंश का उदय हुआ उसे पुराणों में शुंग वंश कहा गया है । अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या कर पुष्यमित्र शुंग ने 184 ई० पू० में इस नवीन राजवंश की स्थापना की । इस सत्ता परिवर्तन से कला का क्षेत्र भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका । साहित्यिक ग्रंथों पतंजलि के महाभाष्य[1], बाणभट्ट की हर्षचरित[2], मालविकाग्निमित्र, ज्योतिष ग्रंथ गार्गी संहिता का युग पुराण[3] तथा आर्यमंजुश्रीमूलकल्प

आदि ग्रंथों से शुंगकाल के विषय में जानकारी प्राप्त होती है । मौर्यकाल के पश्चात् भारतीय कला में मौलिक परिवर्तन हुआ । शुंगकाल में कलाकृतियाँ राजकीय सहयोग की अपेक्षा जनसामान्य के योगदान से बनने लगी ।[4] शुंग कला का मुख्य उद्देश्य लोगों के सामाजिक विचार एवम् सामाजिक भावना को व्यक्त करना था। यही कारण है कि शुंगकालीन कला सामाजिक विषय वस्तु एवम् सामाजिक घटकों को आकर्षित करने व संरक्षण देने में समृद्ध रही है ।[5] मौर्य कला राजकीय कला के रूप में तथा शुंगकला लोककला के रूप में विख्यात है। इस काल की एक अन्य विशेषता कथानकों का वर्णात्मक रूपांकन है। स्वतन्त्र मूर्तियों का निर्माण भी इस काल में सफलता के साथ हुआ है ।

शुंगकाल मृण्मूर्ति कला के निर्माण में सभी युगों में एक शानदार युग था ।[6] इस काल का सबसे बड़ा योगदान कला का वृहत्तर विकास है।[7] इस काल को भारतीय मृण्मूर्ति कला का उत्कृष्ट काल भी कह सकते हैं ।[8] इस काल के कलाकारों ने साँचे का व्यापक रूप से प्रयोग किया तथा मूर्तियों के निर्माण में प्रयुक्त डौलिया शैली को छोड़कर साँचें द्वारा मूर्ति निर्माण शैली को अपनाया ।[9]शुंगकालीन मृण्मूर्तियाँ हरियाणा के सुघ[10], अग्रोहा[11], नौरंगाबाद, अमीन[12] आदि पुरास्थलों से भी प्राप्त हुई है । हरियाणा से प्राप्त मृण्मूर्तियों को सरल मूल्यांकन हेतु निम्न भागों में बाँटा गया है ।

1 धार्मिक मृण्मूर्तियाँ 2 धर्मनिरपेक्ष मृण्मूर्तियाँ 3 पशु-पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ एवम् खिलौने

1.धार्मिक मृण्मूर्तियाँ:

हरियाणा के विभिन्न पुरास्थलों से धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ प्राप्त हुई है । इनमें से मातृदेवी, यक्षी, अर्ध-नारीश्वर, आदिकी मूर्तियों की प्रधानता है

(क) मातृदेवी :

इस काल में मातृदेवी की नग्न मृण्मूर्तियाँ बनाने की परम्परा समाप्त हो गई, परन्तु गुप्त अंगों का प्रदर्शन कपड़ों के साथ भी दिखाई देता है। मातृदेवी की एक मृण्मूर्ति अग्रोहा से प्राप्त हुई है, जिसमें देवी शिशु को गोद में लिए हुए है । देवी का बायाँ हाथ दाएँ स्तन पर है । हाथों में चूड़ियाँ व गले में कण्ठाहार प्रदर्शित है । मृण्मूर्ति की गर्दन तथा घुटनों से नीचे का भाग खंडित[13] है । मातृदेवी का इस प्रकार का चित्रणमथुरा, सारनाथ, कौशाम्बी, संकिसा, पाटलिपुत्र, बसाढ़, अहिच्छत्र, बुलन्दीबाग, तक्षशिला[14] इत्यादि स्थानों से प्राप्त लगभग दूसरी शताब्दी ई०पू० की मृण्मूर्तियों में मिलता है ।

मातृदेवी की एक अन्य मृण्मूर्ति सुघ से मिली है, जिसके गले में मोतियों की माला और कानों में बड़े-बड़े कुंडल शोभायमान है । बाल घुंघराले हैं, जो सुंदर तरीके से बने हुए है ।[15] देवी आशीर्वाद देने की मुद्रा में है, जो खण्डित अवस्था में है । सुघ से एक अन्य मातृदेवी की मृण्मूर्ति मिली है, जो काले रंग की तथा खड़ी अवस्था में है[16] इसमें नीचे का वस्त्र प्रदर्शित है तथा नीचे माला लटकी हुई है । गले में दो फुलनुमा मोटी-2 आकृति वाला

कण्ठाहार तथा कानों में कुंडल प्रदर्शित किए गए है । मृण्मूर्ति के दोनों हाथ शरीर के साथ चिपके हुए है तथा बालों को व्यवस्थित ढंग से प्रदर्शित किया गया है । (चित्र 1)

(चित्र 1)

(ख) लक्ष्मी देवी:

सुघ सेफलक का एक खंडित अवस्था में निचला भाग प्राप्त हुआ है जो 2.5 सेंटीमीटर ऊँचा है ।[17] साँचे निर्मित फलक के आधार पर नारी के पैर बने हुए हैं । आधार और नारी के पैरों के बीच में एक कमल का फूल बना हुआ है । यह नारी मूर्ति खड़ी अवस्था में है कमल के फूल पर खड़ी होने के कारण नारी मृण्मूर्ति को लक्ष्मी देवी माना गया है ।[18] लक्ष्मी देवी की इसी प्रकार की मूर्ति कौशाम्बी[19] से भी प्राप्त हुई है ।

(ग) यक्षी :

हिन्दू, बौद्ध और जैन पौराणिक कथाओं में यक्षी का वर्णन मिलता है । यक्षी यक्ष पुरुष की महिला समकक्ष है और उन्हें कुबेर की पत्नी माना जाता है । यक्षी को अक्सर सुन्दर और उदारता के रूप में चित्रित किया जाता है, जिसमें दाहिनी ओर चौरी, फूले हुए गाल, व्यापक कुल्हे, संकीर्ण कमर, व्यापक कन्धे, बुने हुए बाल और अतिरंजित, गोलाकार स्तन के साथ दिखाया गया है । यक्षी का साहित्यिक वर्णन मार्कण्डेय पुराण में मिलता है ।

सुघ से यक्षी की मृण्मूर्ति भी प्राप्त हुई है जिसका धड़ भाग से ऊपर का हिस्सा ही सुरक्षित है, यह 5 सेंटीमीटर ऊँची है । इस मूर्ति का केस विन्यास विशेष प्रकार का है । दायीं तरफ बालों की लटे बनाकर सजाई गई है तथा बायीं तरफ का कुछ हिस्सा खण्डित है । दायाँ हाथ ऊपर की तरफ मोड़कर यक्षी हाथ में कुछ पकड़े हुए है जबकि बायाँ हाथ कोहनी से नीचे खण्डित है । कानों में बड़े-बड़े गोल छल्ले के आकार के आभूषण धारण किए हुए है, गले में तीन लड़ियों वाला हार स्तनों के मध्य शोभायमान है । वक्षस्थलों का उभार आकर्षक है ।[20]यह मूर्ति वर्तमान समय में चण्डीगढ़ राजकीय संग्रहालय में संरक्षित है । (चित्र 2) । इसी प्रकार की यक्षी की मृण्मूर्ति पंजाब के रोपड़ से भी प्राप्त हुई है ।

(चित्र 2)

सुघ से ही आधार पीठिका पर खड़ी गोलाकार चेहरे वाली अत्यन्त आकर्षक यक्षी की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसका केश-विन्यास विशेष प्रकार का है । मध्यभाग में जूड़ा बनाकर केशों की लटें दोनों तरफ सजाई गई है । कानों में अलंकृत कर्णाभूषण स्पष्ट दिखाई दे रहे है । गले में तीन लड़ियों वाला हार स्तनों के ऊपर से होता हुआ नाभि तक प्रदर्शित है । यक्षी ने बायाँ हाथ मोड़कर नितम्ब पर रखा हुआ है जबकि दाएँ हाथ में चंवर धारण किया हुआ है हाथों में कंगन या चूड़ियाँ तथा पैरों में पायजेब मृण्मूर्ति की सुन्दरता को बढ़ा रही है । यक्षी की कमर पर विशाल कमरबंद बंधा हुआ है । मृण्मूर्ति के बाएँ पैर के पास बच्चे को भी दिखाया गया है ।[21](चित्र 3)

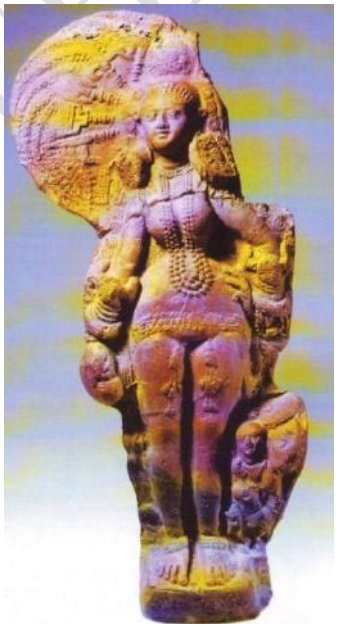

(चित्र 3)

LBP PUBLICATION

अग्रोहा से भी यक्षी की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है जो खड़ी अवस्था में है । यह मृण्मूर्ति 16.5 सेंटीमीटर ऊँची है ।[22] मृण्मूर्ति में बायाँ हाथ कमर पर रखा हुआ है जबकि दायाँ हाथ नीचे की तरफ लटका हुआ है, जिसमें यक्षी ने चंवर पकड़ रखा है । दोनों हाथों में कोहनी तक कंगन या चूड़ियाँ पहनी हुई है, गले में चार लड़ियों वाला हार स्तनों के ऊपर शोभायमान है । यक्षी की कमर पतली, नितम्ब थोड़े विस्तृत तथा स्तनों का उभार गोलाई लिए हुए है, कानों में कर्णाभूषण तथा माथे का टीका मृण्मूर्ति को आकर्षक एवम् सजीव बनाता है । दाएँ घुटने में मोड़ तथा सिर का थोड़ा सा झुकाव मूर्ति को सौम्य गति प्रदान करता है ।[23] (चित्र 4)

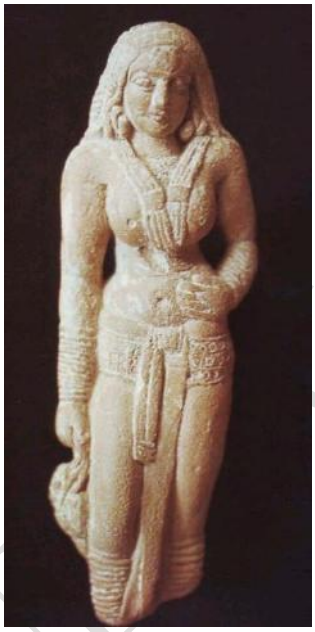

(चित्र 4)

सुघ से एक चंवरधारी यक्षिणी की खड़ी अवस्था वाली मृण्मूर्ति मिली है जो 9 सेंटीमीटर ऊँची और 3 सेंटीमीटर चौड़ी है । वर्तमान समय में यह मूर्ति गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में संरक्षित है ।[24] इस मृण्मय यक्षी मूर्ति का केवल सिर का भाग खण्डित है जबकि शेष भाग बचा हुआ है । यह नारी मूर्ति अपने दाएँ हाथ में चंवर पकड़े हुए जबकि इसका बायाँ हाथ दिखाई नहीं पड़ रहा है ।

(घ) अर्धनारीश्वर

शिव की पूजा अर्चना आद्य-ऐतिहासिक काल से ही प्रचलित थी लेकिन इसका साहित्यिक विवरण सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है, इसमें रूद्र के रूप में शिव का उल्लेख है । शिव पुराण में शिव का विस्तृत विवरण दिया गया है । शिव की पूजा रूद्र, पाशुपति, पाशुपतिनाथ, महादेव, लिंगम, नटराज, नीलकंठ तथा अर्धनारीश्वर रूपों में की जाती है। शिव व शक्ति (पार्वती) के रूप को अर्धनारीश्वर माना गया है ।

सुघ से अर्धनारीश्वर[25] की मृण्मूर्ति भी प्राप्त हुई है जिसमें आधे भाग में शिव और आधे भाग में पार्वती को दिखाया गया है । इस मूर्ति का मुँह खण्डित होने के कारण साफ दिखाई नहीं दे रहा है । इस मूर्ति में शिव वस्त्र लपेटे हुए है, जबकि पार्वती को साड़ी बाँधे हुए दिखाया गया है । यह मृण्मूर्ति गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में संरक्षित है। (चित्र 5)

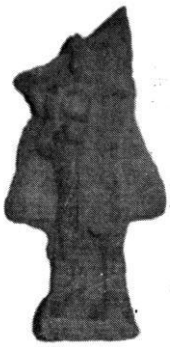

(चित्र 5)

2. धर्मनिरपेक्ष मृण्मूर्तियाँ :

धर्मनिरपेक्ष मृण्मूर्तियों में जन सामान्य का चित्रण किया गया है । जहाँ देवी-देवताओं की मृण्मूर्तियाँ उस समय के धार्मिक पक्ष पर प्रकाश डालती है, वहीं धर्मनिरपेक्ष मृण्मूर्तियाँ जीवन के विविध आयामें पर प्रकाश डालती है ।

(क) नारी

शुंगकालीन पुरास्थलों से पुरुष मृण्मूर्तियों की अपेक्षा नारी मृण्मूर्तियाँ अत्यधिक संख्या में प्राप्त हुई है, जिनको महीन कपड़ों , विभिन्न प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित है[26] तथा सौन्दर्य प्रसाधन इस युग की विशेषता है । सुघ[27] शुंगकालीन मृण्मूर्ति कला का हरियाणा में एक प्रमुख केन्द्र था । सुघ से साँचे से निर्मित एक अत्यन्त आकर्षक नारी मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है जो वर्तमान समय में लंदन के निजी संग्रहालय में संरक्षित है ।[28] इसका दायाँ हाथ खण्डित है जबकि बाएँ हाथ को मोड़कर ऊपर कि ओर करके हथेली को नीचे कि ओर थोड़ा झुकाया हुआ है । गले में हार तथा कानों में कर्णाभूषण है । (चित्र 6)

LBP PUBLICATION

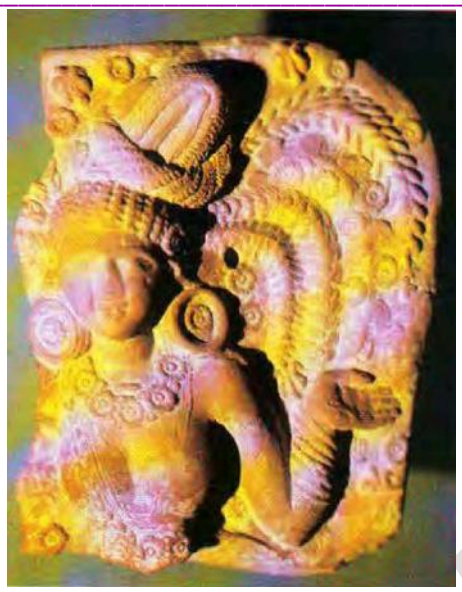

(चित्र 6)

सुघ से 6x7 सेंटीमीटर[29] साँचे से निर्मित फलक प्राप्त हुआ है जिसमें धड़ रहित नारी मूर्ति प्रदर्शित की गई है । इसका वक्षस्थलों से लेकर नीचे टकनों तक का हिस्सा ही सुरक्षित है । मूर्ति किसी धनाढ्य नारी की प्रतीत होती है जिसने अनेक हार, कंगन व कमरबंद धारण किया हुआ है । नारी ने अपना बायाँ हाथ नीचे लटकाया हुआ है जिसमें इसने छोटा चंवर पकड़ा हुआ है । इस नारी के शरीर का निचला भाग साड़ी से लिपटा हुआ है, जो लम्बवत् प्रकार का है । यह मूर्ति वर्तमान समय में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवम् पुरातत्व विभाग के संग्रहालय में संरक्षित है ।[30]

नौरंगाबाद से सुराही की मुठों पर तीन नारी मृण्मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई है[31] जो हाथ जोड़कर अभिवादन करने की मुद्रा में प्रदर्शित है । इन मूर्तियों के दोनों कानों में कुंडल, गले में तीन लड़ियों वाली माला तथा हाथों में कंगन प्रदर्शित है । तीन लड़ियों वाली कटी माला तथा इनका पारदर्शी अधोवस्त्र इनकी शोभा बढ़ा रहा है । धनुषाकार मूठों पर नारी का अंकन इस प्रकार किया गया है मानों ग्रीष्मकाल में प्यास से व्याकुल व्यक्ति को शीतल जल का पान करने के लिए हाथ जोड़कर निमंत्रित कर रही है । (चित्र 7)

LBP PUBLICATION

(चित्र 7)

(ख) नृत्य की मुद्रा वाली नारी मृण्मूर्तियाँ :

सुघ से अत्यन्त आकर्षक पीठिका पर नाटकीय मुद्रा में खड़ी नारी की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई हैं । इसके पूरे शरीर का भार दाईं टांग पर है तथा बायीं टांग को अच्छी तरह से मोड़कर एड़ी को दायीं टांग की जंघा पर रखा हुआ है । दोनों हाथ अभय मुद्रा में है । गले में तीन लड़ियों वाला हार तथा कानों में अलंकृत बड़े-बड़े कर्णाभूषण धारण किए हुए है। नारी के पैर में तीन लड़ियों वाले घुँघरु तथा इसकी खड़े होने की मुद्रा दर्शाती है कि सम्भवत: यह किसी नृतकी की मृण्मूर्ति है । (चित्र 8) इसी प्रकार की नर्तकी की मूर्ति भरहुत से भी प्राप्त हुई हैं ।[32]

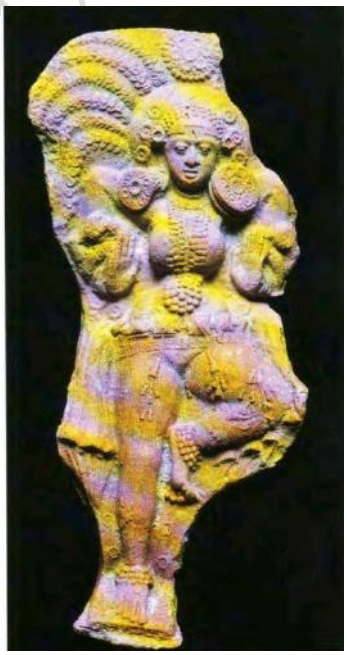

(चित्र 8)

इसके अतिरिक्त सुघ से तीन अन्य नर्तकियों की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है जिनमें से एक का केवल कमर से नीचे का भाग शेष बचा हुआ है।[33] जिसमें नारी ने अपने दाएँ पैर को मोड़कर बाएँ पैर पर रखा हुआ है जबकि दो अन्य मूर्तियों में नारी का कमर से ऊपर का हिस्सा ही शेष है, इसने गले में हार, कानों में कुण्डल धारण किए हुए है तथा हाथ अभय मुद्रा में है ।[34] (चित्र 9)

(चित्र 9)

(ग) शालभंजिका :

प्राचीन काल में शालभंजिका नाम की एक क्रीड़ा (खेल) प्रचलित थी । इसमें महिलाओं द्वारा शाल के वृक्ष की शाखा को नीचे झुकाकर फूल तोड़ने की क्रिया की जाती थी । जो मूर्तियाँ इस क्रिया को करते हुए मिली है, उन्हें शालभंजिका का नाम दे दिया गया है । इस प्रकार की शालभंजिका मृण्मूर्तियाँ अग्रोहा तथा नौरंगाबाद[35] से प्राप्त हुई है जो सुराही की धनुषाकार मूठों पर बनी है । इसमें एक शालभंजिका का दायाँ हाथ ऊपर की ओर वृक्ष की शाखा को झुकाने की अवस्था में मिलता है, जबकि बायाँ हाथ नीचे लटके हुए हैं जिसमें तोड़ा हुआ पुष्प मिलता है । इस मृण्मूर्ति में शालभंजिका के हाथों में कंगन, भुजबंद, गले में माला, वक्ष स्थलों सहित अधोभाग में धोती बाँधे हुए प्रदर्शित की गई है । भरहुत, साँची, मथुरा तथा संघोल से प्रस्तर मूर्तियों में तथा सुनते ही मोहरों पर शालभंजिका के अति मनोहारी रूप अंकित है । कुछ मृण्मूर्तियों में नारी को नग्न दिखाया गया है ।[36] (चित्र 10)

(चित्र 10)

(घ) पुरुष मृण्मूर्तियाँ :

हरियाणा के विभिन्न पुरास्थलों से कुछ जो धर्मनिरपेक्ष मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुए है ।[37] उनमें नारी मृण्मूर्तियों की अपेक्षा पुरुष मृण्मूर्तियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है । इनमें से कुछ मानव मृण्मूर्तियों का निर्माण राजकीय कारीगरों द्वारा किया गया होगा ।[38] पेहवा से सिहाँसन पर बैठी एक राजशाही व्यक्ति की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है, व्यक्ति ने अपना बायाँ पैर मोड़ रखा है जबकि इसका दायाँ पैर सिँहासन के तल पर टिका हुआ है । इस मृण्मूर्ति का बाँया हाथ खण्डित है तथा दाँया हाथ इसने अपनी दायीं टाँग पर रखा हुआ है, इस व्यक्ति के गले में एक हार भी सुशोभित है । चेहरा गर्विला तथा बाल गूँथे हुए दिखाई दे रहे हैं । व्यक्ति धोती पहने हुए हैं तथा ऊपरी भाग में भी खुला वस्त्र धारण किए हुए है । इस मृण्मूर्ति को शुंग-कुषाण कालीन माना गया है ।[39] (चित्र 11)

(चित्र 11)

LBP PUBLICATION

सुघ से एक मानव मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है जिसकी ऊँचाई 23 सेंटीमीटर है ।[40] इस मृण्मूर्ति में मानव शंकु आकार की लम्बी टोपी पहने हुए है । टोपी में अर्द्धचन्द्राकार व गुलाब के फूलों जैसी कलाकृतियाँ बनी हुई है। मुख की सुक्ष्मताएँ घीसी हुई है । कानों में बड़े-बड़े छल्ले के आकार के कर्णाभूषण पहने हुए हैं । गले का आभूषण भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है। मृण्मूर्ति का बायाँ हाथ कमर पर रखा हुआ है तथा दाएँ हाथ से किसी वस्तु को पकड़े हुए है । मानव मृण्मूर्ति को वस्त्र धारण किए हुए दिखाया गया है ।(चित्र 12)

(चित्र 12)

सुघ से प्राप्त यह मानव मृण्मूर्ति खड़ी अवस्था में है । जिसने पशु की खाल से बना बिना बाँहों का ढीला सा कोट पहन रखा है । गले में तीन लड़ियों का हार तथा कानों में बेलनाकार कर्णाभूषण दिखाई दे रहे हैं। मृण्मूर्ति में मानव को दाएँ हाथ में रस्सी से बंधी हुई भेड़ या बकरी को पकड़े हुए दिखाया गया है तथा बाएँ हाथ से बकरी के सींग को पकड़ रखा है । कमर पर दाएँ हाथ की ओर दुधारी चाकु बंधा हुआ है। इसी तरह की दो मृण्मूर्ति राजघाट के तामलुक तथा चन्द्रकेतुगढ से तथा एक तक्षशीला[41] से भी प्राप्त हुई है ।(चित्र 13)

LBP PUBLICATION

(चित्र 13)

सुघ से ही एक अन्य पुरुष मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है जो गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में संरक्षित है । यह मूर्ति पीठिका पर बनाई गई है, जिसकी ऊँचाई 9 सेंटीमीटर है । इसका केवल जंघाओं से नीचे का हिस्सा ही शेष है । मानव मृण्मूर्ति को धोती तथा पैरों में जुते पहने हुए दिखाया गया है । इसका बाएँ पैर के पंजें का अगला हिस्सा नीचे पीठिका को स्पर्श कर रहा है जबकि एड़ी का भाग ऊपर उठा हुआ है । आधार पीठिका भी अलंकृत है ।[42]

अमीन से फलक पर कुश्ती के दृश्य वाली दो पहलवानों की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है ।[43] जिसमें एक पहलवान ने दूसरे पहलवान को नीचे दबोच रखा है, ऊपर वाले पहलवान का चेहरा स्पष्ट दिखाई दे रहा है जबकि नीचे वाले पहलवान का चेहरा स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा है । ऊपर वाले पहलवान के बाल घुँघराले है तथा उसने नीचे वाले पहलवान के दाएँ हाथ को अपने बाएँ हाथ से पकड़ रखा है । जबकि उसने दाएँ हाथ से नीचे वाले पहलवान की गर्दन पकड़ी हुई है । नीचे वाले पहलवान के कानों में बड़े आकार के कर्णाभूषण दिखाई दे रहे हैं । दोनों पहलवानों ने धोती जैसा कोई वस्त्र धारण किया हुआ है । यह फलक शुंगकालीन है ।[44] (चित्र 14)

LBP PUBLICATION

(चित्र 14)

सुघ से एक मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है जिसमें एक व्यक्ति को भोजन पात्र ले जाते हुए दिखाया गया है । भोजन पात्र बाएँ कन्धे पर रखा हुआ है[45], इस पात्र में रोटियाँ, सब्जी की कटोरियाँ और फल रखे हुए दिखाई पड़ते हैं । हाथ में गोल पँखा दिखाई दे रहा है जो मक्खियों एवम् अन्य जीवों को भोजन से हटाने तथा हवा करने के काम में लाया जाता होगा । सम्भवतः यह किसी सेवक की मृण्मूर्ति होगी । सेवक के एक हाथ में कड़ा है तथा दूसरे हाथ में पंखा दिखाई दे रहा है । कानों में कुंडल भी है । वर्तमान समय में यह मृण्मूर्ति गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में संरक्षित है ।

सुघ से ही दो अन्य भोजन पात्र लिए हुए पुरुष मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई है जो वर्तमान समय में इलाहाबाद संग्रहालय में संरक्षित है ।[46] इन मृण्मूर्तियों में पुरुष ने अपने बाएँ कंधे पर भोजन पात्र रखा हुआ है तथा दाहिने हाथ में गोल पँखा लिए हुए हैं, ये मूर्तियाँ पीठिका पर बनी हुई है। इनके कानों में गोल लम्बी चैन, लटकते हुए कुण्डल शोभायमान है, गले में हार और मोतियों की माला सुशोभित है । दोनों मूर्तियों में पुरुष ने चुन्नट वाली धोती पहनी हुई है ।

(ड) तख्ती लिखते हुए बच्चे की मृण्मूर्तियाँ :

सुघ से प्राप्त तख्ती लिखते हुए बच्चे की मृण्मूर्तियाँ शुंगकालीन कला का सुन्दर नमुना है ।[47] इनमें से एक मृण्मूर्ति राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में है जिसका मुख भाग टूटा हुआ है । तीन मृण्मूर्तियाँ गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में संरक्षित जो पूर्ण रूप से सुरक्षित है तथा शेष क्षत-विक्षत है । ये मृण्मूर्तियाँ साँचे द्वारा निर्मित की गई है । इन मृण्मूर्तियों के माध्यम से उस समय के समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता को प्रदर्शित किया गया है ।

गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में संरक्षितएकमृण्मूर्ति में बच्चा तख्ती पर स्वर एवम् व्यंजन लिखता हुआ अंकित किया गया है ।[48] बच्चे के सिर पर पगड़ी तथा कानों में कुंडल है । बच्चे के दोनों पैरों के बीच में तख्ती है और पास में दवात भी रखी हुई हैं तथा हाथ में लेखनी भी है ।[49] लेखनी और दवात दोनों का होना इस बात का संकेत करता है कि बच्चा अक्षर लिखने का प्रयास कर रहा है । (चित्र 15)

(चित्र 15)

(च) मिथुनाकृतियाँ :

शुंगकाल में मिथुन व दम्पत्ति मूर्तियाँ भी कला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं । मिथुन मूर्तियों को आदर्श स्त्री-पुरुष युगल कहा गया है। इस प्रकार की मूर्तियों के फलक में दाहिने भाग में स्त्री आकृति मिलती है तथा बाई ओर पुरुष की आकृति मिलती है जबकि दम्पत्ति मूर्तियों में दाहिने भाग में पुरुष तथा बायीं ओर स्त्री की आकृति मिलती है। मिथुन मूर्तियाँ दम्पत्ति, मूर्तियों की अपेक्षा अधिक गहनों से सुसज्जित मिलती है।

सुघ से अनेक मिथुन मूर्तियाँ मिली है सुघ से प्राप्त एकमिथुनाकृति जो वर्तमान समय में गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में संरक्षित है जो 5.7 सेंटीमीटर ऊँची और 7 सेंटीमीटर चौड़ी है ।[50] फलक में बनी आकृति का कमर से ऊपर का हिस्सा टूटा हुआ है तथा पैरों का निचला भाग की खण्डित अवस्था में है । पुरुष ने सुन्दर झालरदार धोती पहनी हुई है जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है । धोती के पीछे भी एक वस्त्र दिखाई दे रहा है जो सम्भवतः ऊपरी वस्त्र का नीचे का भाग होगा । इसका बायाँ हाथ कमर पर रखा हुआ है पैर खण्डित होने के कारण दिखाई नहीं दे रहे । नारी ने भी बायाँ हाथ अपनी कमर पर रखा हुआ है जो सामने

से स्पष्ट दिखाई दे रहा है । नारी ने धारीदार साड़ी धारण की हुई है । इस फलक पर अलंकरण भी किया गया है जो पुरुष के दायीं ओर दिखाई दे रहा है । (चित्र 16)

(चित्र 16)

करनाल जिले के जैनपुर में एक मिथुन आकृति मिली है जिसमें बायीं तरफ पुरुष तथा दायीं तरफ नारी की मूर्ति बनी हुई है । दोनों आकृतियों के केवल धड़ भाग ही शेष है, बाकि हिस्सा खण्डित हो चुका है । दोनों ने गले में हार पहना हुआ है । नारी के वक्षस्थल उभरे हुए है तथा दोनों कि नाभि को छिद्र द्वारा दिखाया गया है । पुरुष ने कमर पर बेल्ट बांधी हुई है । पुरुष का दाँया हाथ छाती के पास है तथा बाएँ हाथ से उसने नारी का आलिंगन किया हुआ है । नारी ने भी दाएँ हाथ से पुरुष का आलिंगन किया हुआ है तथा बायाँ हाथ खण्ड़ित है । नारी का उपरी हिस्सा नग्न दिखाया गया है । शुंगकालीन इस मृण्मूर्ति का रंग हल्का लाल है ।[51]

अग्रोहा से भी मिथुन आकृतियों की प्राप्ति हुई है,[52] जो घर में सजावट के लिए बनाई गई होगी । इन मूर्तियों का पिछला भाग स्पष्ट है और ऊपर की तरफ दो छिद्र बने हैं, जो सम्भवतः आकृतियों को दीवार पर टांगने के लिए बनाए गए थे, यह मृण्मूर्तियाँ गोलाकार है।

3. पशु-पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ एवं खिलौने :

शुंगकालीन कला में पशु अंकन मौर्यकाल की तरह राजकीय रूप में कम तथा सामाजिक महत्त्व एवं धार्मिक दृष्टिकोण से ज्यादा हुआ है । इस काल में स्वाभाविक पशुओं में हाथी, सिंह, घोड़ा, गेंड़ा, बकरी, वृषभ, मृग[53], बन्दर, भेड़ आदि का अंकन हुआ है तथा काल्पनिक पशुओं में सपक्ष सिंह, सपक्ष अश्व तथा मछली की पूँछ के साथ मगर की आकृति का अंकन हुआ है ।

(क) हाथी सवार

नौरंगाबाद से एक मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसमें हाथी पर सवार स्त्री और पुरुष को अंकित किया गया है, हाथी की पीठ पर कमरबंद बंधा हुआ है, जो यह दिखता है कि इस

LBP PUBLICATION

मृण्मूर्ति पर सवार स्त्री-पुरुष सम्भवतः राजा-रानी ही है ।[54] यह मृण्मूर्ति खण्डित अवस्था में है तथा काफी घिसी हुई है ।

(ख) भेंढ़े

सुघ से भेंढ़े की दो मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई है[55] पहली मृण्मूर्ति के पीछे के पैर खण्डित तथा सींग आगे की ओर घुमावदार अवस्था में है इसके बाल खड़े हुए हैं, मुँह के आगे के भाग में तथा आगे के पैर में छिद्र किए हुए है । इन छिद्रों से पता चलता है कि इनका उपयोग खिलौनों के रूप में किया जाता होगा ।

दूसरी मूर्ति भी खण्डित अवस्था में है और पहली मृण्मूर्ति से भद्दे प्रकार की है । इस मूर्ति का मुख लम्बा, कान बड़े और सींग घुमावदार बनाए गए है, इसके पीछे के दोनों पैर खण्डित है । सुघ से भेंढे की एक अन्य खिलौना मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है जो राजकीय संग्रहालय चण्ड़ीगढ में संरक्षित है । इसका पीछे का हिस्सा पूर्ण रूप से खण्डित है । इसके सींग घुमावदार है तथा गले में पट्टे सृदश कुछ पहनाया गया दिखाई दे रहा है । दोनों सींगों के मध्य उभरे हुए हिस्से को अलंकृत किया गया है। इसके पूरे शरीर पर छोटी-2 बिन्दियाँ बनाई गई है ।[56] आगे के दोनों पैर शरीर के साथ ऊपर की ओर चिपकाए गए है । (चित्र 17)

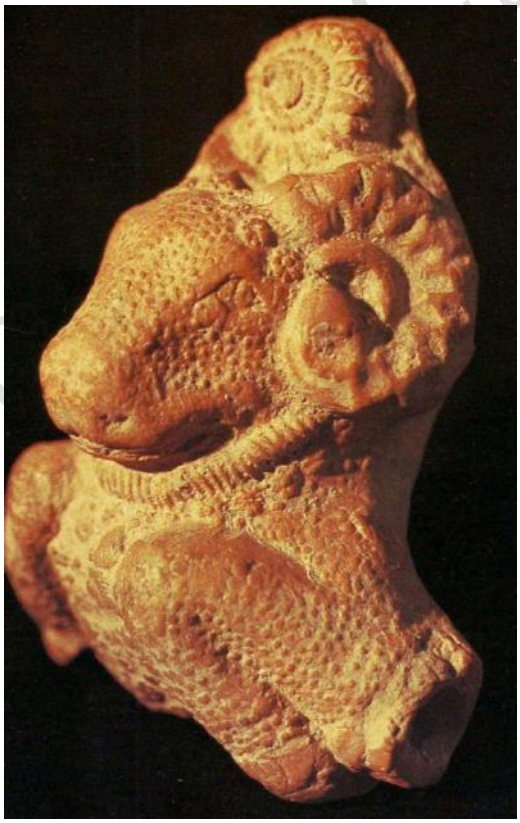

(चित्र 17)

(ग) बैल :

सुघ से जो बैल की दो मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई है । वह खण्डित अवस्था में है । इन दोनों बैलों के पिछले पैर टूटे हुए हैं, केवल आगे का हिस्सा ही शेष बचा हुआ है । बैल के कान बड़े-बड़े है जबकि सींग अधिक बड़े नहीं है, इनका कूबड़ उभरा हुआ है और शरीर पर अनेक निशान भी बने हुए है ।[57] शायद इनका प्रयोग खिलौना गाड़ियों को खींचने के लिए किया गया होगा ।

(घ) वानर :

शुंगकाल में मानव जीवन से सम्बन्धित विभिन्न रूपों का अंकन मिलता है । सुघ से प्राप्त एक मृण्मूर्ति में वानर को मानव की तरह बैठा हुआ दिखाया गया है । इस मूर्ति में उसके दोनों हाथ पैरों पर रखे हुए हैं जबकि गले में माला भी दिखलाई पड़ रही है । चेहरे के हाव-भाव गहन सोच की मुद्रा में दिखाई दे रहे है ।[58] (चित्र 18)यहीं से दो अन्य वानर मृण्मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई है[59] जो खंडित अवस्था में है । इन मूर्तियों का केवल मुँह ही शेष बचा है ।

(चित्र 18)

(ड) पक्षी :

सुघ से एक पक्षी की खिलौना मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसके पैर नहीं है । इस मूर्ति के निचले भाग में एक सुराख बना हुआ है, जिसमें सम्भवतः धुरी डालकर पहियों की सहायता से इसको चलाया जाता होगा। इस पक्षी मृण्मूर्ति की चोंच एवम् आँखें बहुत सुन्दर बनी हुई है । चोंच में एक सुराख भी है जिसमें रस्सी डालकर बच्चे इसको खींचते होंगे । इसके पंख एवम् कान भली प्रकार से बने हैं जो कलाकार की निपुणता का परिचायक है ।[60] (चित्र 19)

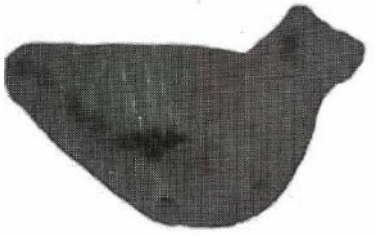

(चित्र 19)

सुघ से एक काले रंग की गरूड़ आकृति की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है। इसका रंग धुएँ के कारण शायद काला पड़ गया है । यह मूर्ति अलंकृत एवम् नीचे से गोल है । इसकी दोनों आँखें स्पष्ट दिखाई दे रही है । इसका नाक भी स्पष्ट एवम् दोनों आँखों के बीच दिखाई दे रहा है तथा गरूड़ का मुँह खुला हुआ प्रदर्शित है । इसका दाएँ कान का कुछ हिस्सा टूटा हुआ है । यह मूर्ति वर्तमान समय में गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में संरक्षित है ।

अतः यह निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शुंगकाल मृण्मूर्ति कला के निर्माण में सभी युगों में एक शानदार युग था । इस काल में कलाकृतियाँ राजकीय सहयोग की अपेक्षा जनसामान्य के योगदान से बनने लगी । इस काल के कलाकारों ने साँचे का व्यापक रूप से प्रयोग किया तथा मूर्तियों के निर्माण में प्रयुक्त डौलिया शैली को छोड़कर साँचें द्वारा मूर्ति निर्माण शैली को अपनाया ।

संदर्भ सूची :

1. नीरजा गौड़, *शुंग काल में धर्म एवं कला,* पृ० 1
2. वासुदेव शरण अग्रवाल, *1953, हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन,* पृ० 67
3. सच्चिदानन्द त्रिपाठी, *शुंगकालीन भारत,* पृ० 42
4. निहाररंजन राय, *मौर्य तथा मौर्योत्तर कला,* पृ० 44
5. N. R. Ray, ***Maurya and sunga Art,*** p, 94
6. Mohinder Singh, Terracotta Art in Haryana,*The Indian History Congress,*Vol. 47, 1986, p. 168
7. रमानाथ मिश्र, *भारतीय मूर्तिकला,* पृ० 53
8. अरविन्द कुमार सिंह, *प्राचीन भारतीय मूर्तिकला एवम् चित्रकला,* पृ० 30
9. कुसुमकुमारी जायसवाल, *उत्तर भारत की प्राचीन हिन्दू देवी मूर्तियाँ,* पृ० 33
10. Surajbhan, Excavation at Sugh, *Journal of Haryana Studies,* Vol. 9, 1977,pp. 31-32
11. ***I.A.R.,*** 1981-81, p, 15
12. Alexander Cunningham, ***ASI Report, Vol. XIV,*** p, 96
13. जगदीश प्रसाद, *प्राचीन भारतीय मृन्मूर्ति कला,* पृ० 39

LBP PUBLICATION

14. Jhon Marshall, ***Guide to Taxila,*** p, 59
15. जगदीश प्रसाद, *पूर्वोद्धृत,* पृ० 39
16. *वही*
17. S. P. Shukla, ***Sculpture and Terracottas in the Archaeology Museum,*** Kurukshetra University, Kurukshetra**,** PL. LIV-3
18. S. S. Biswas, ***Terracotta Art of Bengal,*** p. 157 PL. VIII
19. Rajesh Hooda and Rajpal, Women in Sunga's Art : A Study,*Pramana Research Journal,*Issue 11,2014, p. 359
20. Naman P. Ahuja, Moulded Terracotta From the Indo-Gangetic Divide Sugh, Circa 200 BCE-50CE, *Indian Terracotta Sculpture the Early Period,* [Ed.], P.Pal, Marg, Mumbai, 2002, PL-7
21. Naman P. Ahuja, 2004, *The style of Early Historic Terracottas From The Indo-Gangetic Divide,*The Ananada – Vana of Indian Art (Ed.) N. Krishana & M. Krishana, Varnasi, 2004, p, 48, PL, 1
22. Naman, p. Ahuju, 2002, ***op.cit.,*** PL, 9
23. विराजानन्द दैवकरणि, 2008, अगरोहा (अग्रोदक) की मृन्मूर्तियाँ, चित्र–274, पृ० 56
24. गुरुकुल झज्जर, संग्रहालय, *मूर्तिकक्ष–3*
25. जगदीश प्रसाद, *पूर्वोद्धृत,* पृ० 39
26. Mohinder Singh, ***op.cit.,*** p, 268
27. ***I.A.R.,*** 1970-71 p, 39
28. Naman P. Ahuja, 2004, ***op.cit.,*** p, 52, PL, 7
29. S. P. Shukla, ***op.cit.,*** PL, L111-4
30. व्यक्तिगत वार्ता,एस० पी० शुक्ला, पूर्व प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
31. विरजानन्द दैवकरणि, *नौरंगाबाद (बामला) की मृन्मूर्तियाँ,* चित्र 69, 70, 71 फलक 18
32. Naman, P. Ahuja, 2004, ***op.cit.,*** p, 51, PL-5
33. ***Ibid,*** PL,5
34. ***Ibid.,*** p, 51, PL-6
35. विरजानंद दैवकरणि, *पूर्वोद्धृत,* चित्र–57, पटल–16
36. भगवतशरण उपाध्याय, *भारतीय कला की भूमिका,* पृ० 60
37. Mohinder Singh, ***op.cit.,*** p, 169
38. Alexander Cunningham, ***op.cit.,*** p, 101
39. ***Ibid,*** p, 96, PL-XXVII

LBP PUBLICATION

[40]. Naman P. Ahuja, 2002, ***op.cit.,*** PL-3
[41]. ***Ibid***, 2004, p, 54, PL, 9
[42]. Naman, P. Ahuja, 2002, ***op.cit.,*** PL-12
[43]. Alexander Cunningham, ***op.cit.,*** P, 96,PL. XXVII
[44]. Mohinder Singh, ***op.cit.,*** p. 169
[45]. गुरुकुल झज्जर, संग्रहालय, *मूर्तिकक्ष–3*
[46]. Naman, P. Ahuja, 2004, ***op.cit.,*** p, 55, PL. 11, 12
[47]. R. C. Aggarwal, Learning of Alphabets, *Journal of oriental institute,*Vol. XVII, no, 4, p, 357
[48]. ***I.A.R.,*** 1968-69. PL-LVIII
[49]. Naman, P. Ahuja, 2002, ***op.cit.,*** PL, 2
[50]. गुरुकुल झज्जर, संग्रहालय, *मूर्तिकक्ष–3*
[51]. Amar Singh, ***Archaeology of Karnal and Jind Districts.*** (unpublished Thesis Kurukshetra University, Kurukshetra), pp. 215-216, PL-XXXIII A-3
[52]. विरजानन्द दैवकरणि, 2008, *पूर्वोद्धृत,* चित्र, 126
[53]. नीरजा गौड़, *पूर्वोद्धृत,* पृ० 125
[54]. गुरुकुल झज्जर, संग्रहालय, *मूर्तिकक्ष–3*
[55]. *वही*
[56]. Naman P. Ahuja, 2002, ***op.cit.,*** PL, 10
[57]. जगदीश प्रसाद, *पूर्वोद्धृत,* चित्र 59
[58]. योगानन्द शास्त्री, *पूर्वोद्धृत,* पृ० 41
[59]. गुरुकुल झज्जर, संग्रहालय, *मूर्तिकक्ष–2*
[60]. गुरुकुल, झज्जर संग्रहालय, *मूर्तिकक्ष–3*

LBP PUBLICATION